2 अपना-अपना भाग्य

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **कहानी** में लेखक ने बताया है कि अपना-अपना भाग्य कहकर कैसे हर कोई अपनी ज़िम्मेदारी से बचना चाहता है। इस कहानी में निम्न वर्ग के एक बालक की दयनीय आर्थिक स्थिति के माध्यम से विभिन्न वर्गों का तुलनात्मक विश्लेषण किया है। यह एक ऐसे ग्रामीण बालक की कहानी है जो ग़रीबी से तंग आकर नैनीताल आ जाता है। लोगों की कठोरता और स्वार्थी स्वभाव उसके अंर्तहृदय को झकझोर कर रख देते हैं।

1

बहुत कुछ निरुद्देश्य घूम चुकने पर हम सड़क किनारे बनी एक बेंच पर बैठ गए।

नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रुई के रेशे-से, भाप-से बादल हमारे सिरों को छू-छू कर बेरोक-टोक घूम रहे थे। हलके प्रकाश और अंधियारी से रंगकर कभी वे नीले दिखते, कभी सफ़ेद और फिर ज़रा-सी देर में अरुण पड़ जाते। वे जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे थे।

ताल में किश्तियाँ अपने सफ़ेद पाल उड़ाती हुईं एक-दो अंग्रेज़ यात्रियों को लेकर, इधर-से-उधर खेल रही थीं। कहीं कुछ अंग्रेज़ अपनी सुई-सी शक्ल की डोंगियों को शर्त बाँधकर सरपट दौड़ा रहे थे। कहीं किनारे पर कुछ साहब अपनी बंसी पानी में डाले सधैर्य, एकाग्र, एकस्थ, एकनिष्ठ मछली चिंतन कर रहे थे।

सड़क पर से नर-नारियों का अविरत प्रवाह आ रहा था और जा रहा था। अधिकार व गर्व में तने अंग्रेज़ उसमें थे और चिथड़ों से सजे, घोड़ों की बाग थामे वे पहाड़ी उसमें थे, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान को कुचलकर शून्य बना लिया है और जो बड़ी तत्परता से दुम हिलाना सीख गए हैं।

2

घंटे-के-घंटे सरक गए, अंधकार गाढ़ा हो गया। बादल सफ़ेद होकर जम गए। अब इक्का-दुक्का आदमी सड़क पर छतरी लगाकर निकल रहे थे। हम वहीं-के-वहीं बैठे थे। सरदी-सी मालूम हुई। हमारे ओवरकोट भीग गए थे। हमारे देखते-ही-देखते एक घने परदे ने आकर सबको ढक दिया। रोशनियाँ मानो मर गईं। जगमगाहट लुप्त हो गई। वे काले-काले भूत से पहाड़ भी इस सफ़ेद परदे के पीछे छिप गए। ऐसा घना कुहरा हमने कभी नहीं देखा था। वह टप-टप टपक रहा था। हम अपने-अपने होटलों के लिए चल दिए।

3

रास्ते में दो मित्रों का होटल मिला। दोनों वकील मित्र छुट्टी लेकर चले गए। हम दोनों आगे बढ़े। हमारा होटल आगे था। ताल के किनारे-किनारे हम चल रहे थे। सरदी इतनी थी कि सोचा, कोट पर एक कंबल और होता तो अच्छा होता। रास्ते में ताल के बिलकुल किनारे एक बेंच पड़ी थी। मैं झटपट होटल पहुँचकर, इन भीगे कपड़ों से छुट्टी पा गरम बिस्तर में छिप सो जाना चाहता था, पर साथ के मित्र की झनक कब उठेगी और कब थमेगी— इसका क्या ठिकाना है! और वह कैसी क्या होगी— इसका भी कुछ अंदाज़ है। उन्होंने कहा, "आओ, ज़रा यहाँ बैठें।"

हम उस कुहरे में रात के ठीक एक बजे, तालाब के किनारे की उस भीगी, बरफ़ीली ठंडी हो रही लोहे की बेंच पर बैठ गए। 5-10-15 मिनट हो गए। मित्र के उठने का इरादा न मालूम हुआ तो मैंने खीझकर कहा, "चलिए भी...."

हाथ पकड़कर ज़रा बैठने के लिए जब इस ज़ोर से बैठा लिया गया, तो और चारा न रहा—लाचार बैठे रहना पड़ा। चुप-चुप बैठे तंग हो रहा था कि मित्र अचानक बोले, "देखो वह क्या है?"

मैंने देखा— कुहरे की सफ़ेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूरत हमारी तरफ़ आ रही थी। मैंने कहा, "होगा कोई।"

तीन गज़ की दूरी से दीख पड़ा, एक लड़का सिर के बड़े-बड़े बालों को खुजलाता हुआ चला आ रहा है। नंगे पैर है, नंगे सिर। एक मैली-सी कमीज़ लटकाए है। पास की चुंगी की लालटेन के छोटे-से प्रकाश-वृत्त में देखा—कोई दस बरस का होगा। गोरे रंग का है, पर मैल से काला पड़ गया है। आँखें अच्छी बड़ी, पर सूनी हैं। माथा जैसे अभी से झुर्रियाँ खा गया है।

मित्र ने आवाज़ दी— "ऐ!"

उसने जैसे जागकर देखा और पास आ गया।

"तू कहाँ जा रहा है रे?"

उसने अपनी सूनी आँखें फाड़ दीं।

"दुनिया सो गई, तू ही क्यों घूम रहा है?"

बालक मौन-मूक, फिर भी बोलता हुआ चेहरा लेकर खड़ा रहा।

"कहाँ सोएगा?"

"यहीं कहीं।"

"कल कहाँ सोया था?"

"दुकान पर।"

"आज वहाँ क्यों नहीं?"

"नौकरी से हटा दिया!"

"क्या नौकरी थी?"

"सब काम। एक रुपया और जूठा खाना।"

"फिर नौकरी करेगा?"

"हाँ।"

"बाहर चलेगा?"

"हाँ..."

"आज क्या खाना खाया?"

"कुछ नहीं।"

"अब खाना मिलेगा?"

"नहीं।"

"यों ही सो जाएगा?"

"हाँ..."

"कहाँ?"

"यहीं कहीं।"

"इन्हीं कपड़ों से?"

बालक फिर आँखों से बोलकर मूक खड़ा रहा। आँखें मानो बोलती थीं—

"यह भी कैसा मूर्ख प्रश्न!"

"माँ-बाप हैं?"

"हैं।"

"कहाँ?"

"पंद्रह कोस दूर गाँव में।"

"तू भाग आया?"

"हाँ।"

"क्यों?"

"मेरे कई छोटे भाई-बहन हैं, सो भाग आया। वहाँ काम नहीं, रोटी नहीं। बाप भूखा रहता था और मरता था। माँ भूखी रहती थी और रोती थी। सो भाग आया। एक साथी और था। उसी गाँव का था, मुझसे बड़ा। दोनों यहाँ साथ आए। वह अब नहीं है।"

"कहाँ गया?"

"मर गया।"

इस ज़रा-सी उम्र में ही उसकी मौत से पहचान हो गई। मुझे अचरज हुआ, दर्द हुआ, पूछा, "मर गया?"

"हाँ, साहब ने मारा, मर गया।"

"अच्छा, हमारे साथ चल।"

वह साथ चल दिया। लौटकर हम वकील दोस्तों के होटल में पहुँचे।

"वकील साहब!"

वकील लोग होटल के ऊपर के कमरे से उतरकर आए।

कश्मीरी दोशाला लपेटे थे, मोजे चढ़े पैरों में चप्पल थी। स्वर में हलकी-सी झुँझलाहट थी, कुछ लापरवाही थी।

"ओ-हो, फिर आप! कहिए?"

"आपको नौकर की ज़रूरत थी न? देखिए, यह लड़का है।"

"कहाँ-से लाए? इसे आप जानते हैं?"

"जानता हूँ। यह बेईमान नहीं हो सकता।"

"अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में गुन छिपे रहते हैं। आप भी क्या अजीब हैं— उठा लाए कहीं से— लो जी, यह नौकर लो।"

"मानिए तो, यह लड़का अच्छा निकलेगा।"

"आप भी... जी, बस खूब हैं। ऐरे-गैरे को नौकर बना लिया जाए और अगले दिन वह न जाने क्या-क्या लेकर चंपत हो जाए।"

"आप मानते ही नहीं, मैं क्या करूँ!"

"मानें क्या ख़ाक? आप भी जी अच्छा मज़ाक करते हैं— अच्छा अब हम सोने जाते हैं।"

और वह चार रुपये रोज़ के किराये वाले कमरे में सजी मसहरी पर झटपट सोने चले गए।

4

वकील साहब के चले जाने पर होटल के बाहर आकर मित्र ने अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ टटोला, पर झट कुछ निराश भाव से हाथ बाहर कर वे मेरी ओर देखने लगे।

"क्या है?"— मैंने पूछा।

"इसे खाने के लिए कुछ देना चाहता था।" — अंग्रेज़ी में मित्र ने कहा, "मगर दस-दस के नोट हैं।"

"नोट ही शायद मेरे पास हैं, देखूँ?"

सचमुच मेरी जेब में भी नोट ही थे। हम फिर अंग्रेज़ी बोलने लगे। लड़के के दाँत बीच-बीच में कटकटा उठते थे। कड़ाके की सरदी थी।

मित्र ने पूछा, "तब?"

मैंने कहा, "दस का नोट ही दे दो।" सकपकाकर मित्र मेरा मुँह देखने लगे, "अरे यार बजट बिगड़ जाएगा। हृदय में जितनी दया है, पास में उतने पैसे तो नहीं।"

"तो जाने दो, यह दया ही इस जमाने में बहुत है"— मैंने कहा। मित्र चुप रहे। जैसे कुछ सोचते रहे, फिर लड़के से बोले—

"अब आज तो कुछ हो नहीं सकता। कल मिलना। वह 'होटल-डि-पव' जानता है? वहीं कल दस बजे मिलेगा?"

"हाँ.. कुछ काम देंगे हुज़ूर?"

"हाँ-हाँ, ढूँढ़ दूँगा।"

"तो जाऊँ?"— लड़के ने निराश आशा से पूछा।

"हाँ" — ठंडी साँस खींचकर फिर मित्र ने पूछा, "कहाँ सोएगा?"

"यहीं-कहीं, बेंच पर, पेड़ के नीचे, किसी दुकान की भट्टी में।" बालक कुछ ठहरा। मैं असमंजस में रहा। तब वह प्रेतगति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया। हम भी होटल की ओर बढ़े। हवा तीखी थी— हमारे कोट को पार कर बदन में तीर-सी लगती थी।

सिकुड़ते हुए मित्र ने कहा, "भयानक शीत है। उसके पास कम-बहुत कम कपड़े...!"

"यह संसार है, यार!"— मैंने स्वार्थ की फ़िलॉसफ़ी सुनाई। "चलो, पहले बिस्तर में गरम हो लो, फिर किसी और की चिंता करना।"

उदास होकर मित्र ने कहा, "स्वार्थ! जो कहो, लाचारी कहो, निठुराई कहो या बेहयाई।"

दूसरे दिन, नैनीताल स्वर्ग के किसी काले गुलाम पशु के दुलार का वह बेटा—वह बालक निश्चित समय पर हमारे होटल 'होटल-डि-पव' में नहीं आया। हम अपनी नैनीताल सैर खुशी-खुशी खत्म कर चलने को हुए। उस लड़के की आस लगाए बैठे रहने की ज़रूरत हमने न समझी।

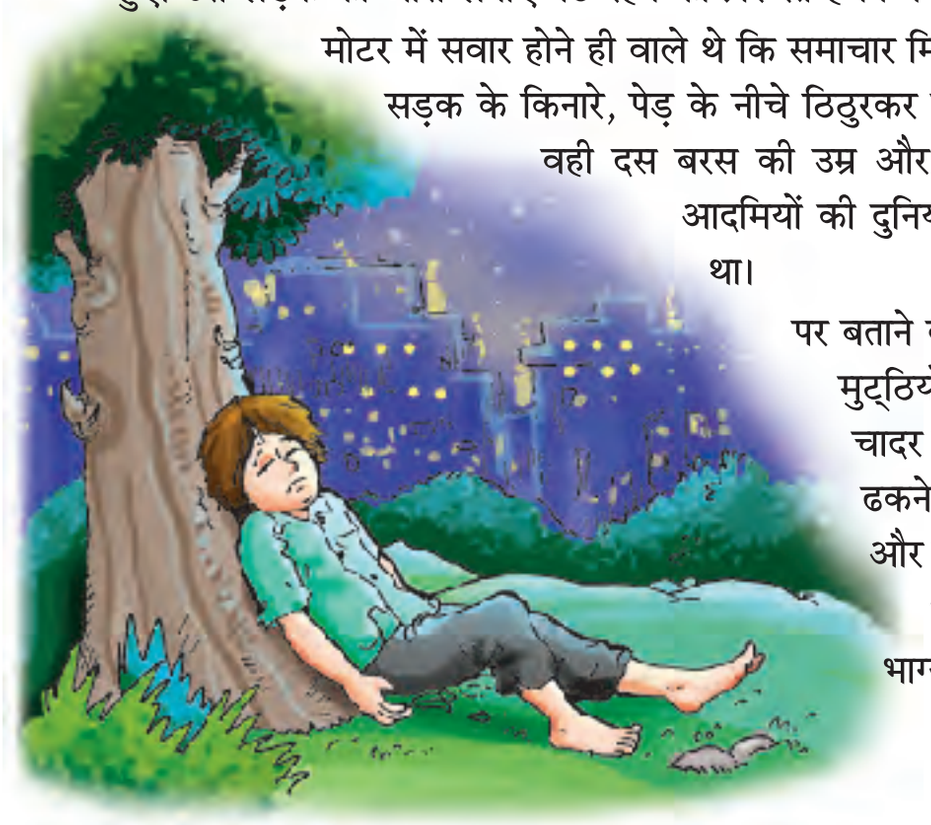

मोटर में सवार होने ही वाले थे कि समाचार मिला — पिछली रात एक पहाड़ी बालक, सड़क के किनारे, पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया। मरने के लिए उसे वही जगह, वही दस बरस की उम्र और वही काले चीथड़ों की कमीज़ मिली। आदमियों की दुनिया ने बस यही उपहार उसके पास छोड़ा था।

पर बताने वालों ने बताया कि ग़रीब के मुँह, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर बरफ़ की हलकी-सी चादर चिपक गई थी। मानो दुनिया की बेहयाई ढकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था।

सब सुना और सोचा — अपना-अपना भाग्य।

— जैनेंद्र

जीवन-परिचय

जैनेंद्र
(1905-1988)

हिंदी साहित्य जगत में प्रेमचंद के बाद **जैनेंद्र** को 'मील का पत्थर' माना जाता है। मनोवैज्ञानिक कथा-साहित्य में इनका अभूतपूर्व योगदान है। जैनेंद्र जी का जन्म सन 1905 में अलीगढ़ के मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इन्होंने काशी विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्ति के दौरान ही ये गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए। 'हंस' पत्रिका का संपादन कार्य भी सँभाला। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं— 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'सुखदा', 'परख', 'विवर्त', 'समय और हम' आदि।
24 दिसंबर, 1988 में इनका निधन हो गया।

शब्द-संपदा

निरुद्देश्य = बिना किसी उद्देश्य के। **किश्तियाँ** = छोटी नौका। **सरपट** = सबसे तेज़ चाल में। **एकाग्र** = चंचलता से रहित। **एकनिष्ठ** = जिसकी निष्ठा एक में हो। **अविरत** = निरंतर। **चुंगी** = कर वसूल करने के लिए बनाई गई चौकी। **अचरज** = आश्चर्य, हैरानी। **दोशाला** = बड़ी-लंबी शॉल। **मसहरी** = मच्छरदानी। **असमंजस** = दुविधा, अड़चन। **फ़िलॉसफ़ी** = दर्शनशास्त्र। **बेहयाई** = बेशर्मी। **अरुण** = लाल, उषा या सिंदूर के रंग का।

अभ्यास प्रश्न

कहानी से .....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. ताल में किश्तियाँ अपने सफ़ेद पाल उड़ाती हुई किसे लेकर इधर से उधर खेल रही थीं?

(i) लहरों को। ☐ (ii) लेखक के मित्रों को। ☐

(iii) अंग्रेज़ यात्रियों को। ☐ (iv) सरसराती हवाओं को। ☐

ख. कुछ साहब किनारे पर बैठे क्या कर रहे थे?

(i) ठंडी-ठंडी हवा खा रहे थे। ☐ (ii) पानी में पाँव डालकर बैठे थे। ☐

(iii) मछलियाँ पकड़ रहे थे। ☐ (iv) संगीत सुन रहे थे। ☐

ग. कुहरे की सफ़ेदी में लेखक को अपनी ओर आती क्या चीज़ दिखाई दी?

(i) एक काली-सी मूरत। ☐ (ii) एक काली शक्ल-सूरत की महिला। ☐

(iii) एक विशाल शरीर और भयानक सूरत का व्यक्ति। ☐ (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं। ☐

घ. वकील साहब के पहाड़ी लड़के को नौकर रखने के बारे में क्या विचार थे?

(i) पहाड़ी बहुत आत्मीय और वफ़ादार होते हैं। ☐ (ii) पहाड़ी बहुत अभद्र और कामचोर होते हैं। ☐

(iii) पहाड़ी लड़के छुट्टी अधिक लेते हैं। ☐ (iv) पहाड़ी बड़े शैतान और अविश्वसनीय होते हैं। ☐

ङ. मोटर में सवार होने से पूर्व लेखक और उसके मित्र को क्या समाचार मिला?

(i) पिछली रात एक युवक सड़क के किनारे, पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया। ☐

(ii) एक ग़रीब महिला होटल के निकट सड़क दुर्घटना में मर गई। ☐

(iii) पिछली रात एक पहाड़ी लड़का, सड़क के किनारे, पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया। ☐

(iv) उनके अन्य साथी वकील साहब की हृदय गति रुकने से मौत हो गई। ☐

2. दिए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए :

क. होटल लौटकर लेखक की अपने मित्र से क्या बात हुई?

ख. 'आदमियों की दुनिया' ने लड़के के पास क्या उपहार छोड़ा था?

ग. लड़के ने लेखक और उनके मित्र से बातचीत में घर छोड़ने का क्या कारण बताया?

घ. वकील साहब ने लड़के को नौकरी न देने के लिए तर्क दिए। इससे उनकी किस मानसिकता का परिचय मिलता है?

3. किसने, किससे कहा?

क. "इस ज़रा-सी उम्र में ही उसकी मौत से पहचान हो गई।" _____

ख. "हृदय में जितनी दया है, पास में उतने पैसे तो नहीं।" _____

ग. "अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं।" _____

4. सही वाक्य के सामने ✓ और गलत वाक्य के सामने ✗ चिह्न लगाइए :

क. लड़का कोई दस बरस का होगा। ☐

ख. वकील साहब ने लड़के को नौकरी पर रख लिया। ☐

ग. लेखक के मित्र ने लड़के को दस रुपये का नोट दिया। ☐

घ. लेखक 'होटल-डि-पव' में ठहरा हुआ था। ☐

ङ. मानो दुनिया की बेहयाई ढकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था। ☐

5. आशय स्पष्टीकरण :

क. बस, ज़रा-सी उम्र में ही उसकी मौत से पहचान हो गई।

ख. मानो दुनिया की बेहयाई ढकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफ़ेद और ठंडे कफ़न का प्रबंध कर दिया था।

6. विचार कौशल :

क. लेखक, वकील और उनके मित्र के मन में दया है, परंतु फिर भी वे लड़के के लिए कुछ नहीं कर पाते। इससे लेखक कैसे लोगों की ओर इशारा करना चाहता है?

ख. यदि आपको कभी कोई ऐसा बच्चा मिले जिसे आपकी मदद की ज़रूरत हो, तब आप उसकी मदद कैसे करेंगे?

भाषा से........

1. उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए :

निरुद्देश्य – ________ + ________ बेरोक – ________ + ________ सधैर्य ________ + ________

अविरत – ________ + ________ बेईमान – ________ + ________ उपहार ________ + ________

2. संधि-विच्छेद करके लिखिए :

सम्मान = ________ + ________ संसार = ________ + ________ स्वागत = ________ + ________

3. समान अर्थ वाले शब्द लिखिए :

प्रकाश – ________ अरुण – ________ किनारा – ________ बादल – ________

पहाड़ – ________ ताल – ________ रास्ता – ________ मित्र – ________

4. 'इत' प्रत्यय लगाकर लिखिए :

प्रतिष्ठा + ________ = ________ सम्मान + ________ = ________ प्रकाश + ________ = ________

घृणा + ________ = ________ मूर्च्छा + ________ = ________ लज्जा + ________ = ________

5. पाठ से पुनरुक्त शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए :

________ ________ ________ ________ ________

________ ________ ________ ________ ________

________ ________ ________

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. 'मेरी पर्वतीय यात्रा' शीर्षक पर एक अनुच्छेद लिखिए।
2. अपने आस-पास के घरों, बाज़ार की दुकानों और दफ़्तरों में काम करने वाले किन्हीं 5 बच्चों का साक्षात्कार लीजिए।
3. राशन की दुकान पर काम करने वाले लड़के से बातचीत कीजिए। उस बातचीत को संवाद-शैली में लिखिए।